2 जुलाई 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भगवान बनने का उपाय जगत से अलिप्त रहकर साक्षीभाव से ज्ञाता-दृष्टा बने रहना ही है।

ह्न आप कुछ भी कहो, पृष्ठ-14

वर्ष : 31, अंक : 07 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (प्रथम), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

हाडौती, मेवाड़ एवं म.प्र. के ४३ स्थानों पर एक साथ ह्न

व्यक्तित्व विकास ग्रुप शिविर एवं युवा फैडरेशन कोटा का सम्भागीय सम्मेलन

कोटा (राज.) : अ.भा.जैन युवा फैडरेशन सम्भाग कोटा द्वारा संचालित एवं कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु आश्रम कोटा द्वारा आयोजित जैन दर्शन एवं व्यक्तित्त्व विकास शिविर हाड़ौती मेवाड़ क्षेत्र के ४३ स्थानों पर ७ से १५ जून, ०८ तक आयोजित किया गया। प्रान्तीय उपाध्यक्ष पण्डित रतन चौधरी ने उक्त जानकारी देते हुये बताया कि इस शिविर में लगभग ३००० बालकों एवं ५ हजार साधर्मीजनों ने लाभ लिया। पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा के निर्देशन में ७० विद्वानों ने उक्त शिविर के माध्यम से ज्ञानगंगा प्रवाहित कर धर्म प्रभावना की।

शिविर के समापन एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडेरशन के सम्भागीय सम्मेलन के मुख्य अतिथि प्रदेशाध्यक्ष डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल अजमेर ने ग्रुप शिविरों की अगली कड़ी आँगनबाड़ी योजना शुरु करने की घोषणा की। जिसमें २ से ५ वर्ष तक के बच्चों को संस्कारित किया जायेगा।

फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में फैडरेशन एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट के इसीप्रकार प्रगतिपथ पर चलते रहने की भावना व्यक्त की।

विशिष्ट अतिथि राजस्थान प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रकुमार जैन ने कहा कि फैडरेशन की अनेक नवीन योजनाओं और कार्यप्रणाली प्रशिक्षण हेतु २० जुलाई, ०८ को किशनगढ़ (अजमेर) में शिविर आयोजित किया जा रहा है। विशिष्ट अतिथि बूंदी विधायिका श्रीमती ममता शर्मा ने बाल एवं युवा पीढ़ी को संस्कारित करने के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुये भविष्य में पुन: ऐसे शिविर आयोजित करने की प्रेरणा दी।

मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री ज्ञानचंदजी जैन ने शिविर की उपयोगिता पर बल देते हुये प्रतिवर्ष ऐसे शिविर गाँव-गाँव में लगाने की भावना व्यक्त की।

इसी अवसर पर मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री प्रेमचन्दजी बजाज ने दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय प्रारम्भ करने की घोषणा की। महाविद्यालय के प्राचार्य पं.मनीषकुमारजी शास्त्री ने इस संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

कोटा फैडरेशन के अध्यक्ष एवं शिविर के महामंत्री श्री तेजमल पटवारी ने धन्यवाद ज्ञापन तथा पं. अजितजी शास्त्री अलवर ने सभा का संचालन किया।

उदयपुर संभाग के तीन जिलों में २३ स्थानों पर एक साथ ह्न

ग्रुप शिविर सम्पन्न

लूणदा (राज.) : यहाँ स्व.श्रीमती सौभागबाई किकावत की पुण्य स्मृति में संस्थापित शाश्वत चेरिटेबल ट्रस्ट लूणदा द्वारा ग्रुप-शिविरों की शृंखला में इस वर्ष दिनांक 1 से 8 जून,08 तक उदयपुर संभाग के तीन जिलों में 23 स्थानों पर एक साथ शिविरों का आयोजन किया गया। शिविर में लगभग 40 विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ। उद्घाटन का कार्यक्रम सभी स्थानों पर अपने-अपने स्तर पर किया गया।

इस अवसर पर यहाँ 20 तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। शिविर में पण्डित रमेशचंदजी जयपुर व पण्डित निशांतजी ध्रुवधाम के प्रवचन व कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। विधि-विधान के कार्यक्रम पण्डित सचिन शास्त्री गढ़ी के सहयोग से सम्पन्न हुये।

शिविर में लगभग 1500 लोगों ने धर्मलाभ लिया। सम्पूर्ण शिविर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम व पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर के निर्देशन में पण्डित अंकित शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

समापन समारोह ह्न दिनांक 8 जून को लूणदा में विशाल स्तर पर शिविर का समापन समारोह सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री श्याम एस. कस्तूरचंदजी सिंघवी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री भागचंदजी कालिका उदयपुर, श्री महिपालजी ज्ञायक बाँसवाड़ा व श्री विनोदकुमारजी सूरत मंचासीन थे।

इसी अवसर पर प्रदेश युवा मण्डल का अधिवेशन भी आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता युवा फैडरेशन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल अजमेर ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर मंचासीन थे।

कार्यक्रम में 23 स्थानों के प्रथम व द्वितीय रहे छात्रों को विशिष्ट पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

ज्ञातव्य है कि यह सम्पूर्ण शिविर शाश्वत चेरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक चांदमलजी ललितकुमारजी किकावत परिवार लूणदा द्वारा आयोजित हुआ।

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में 3 से 12 अगस्त तक एवं 5 से 14 अक्टूबर तक आयोजित शिविरों में अवश्य पधारें।

सम्पादकीय –

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु 9

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

३. भूमिशयन ह्न मूलाचार के अनुसार रात्रि के पिछले प्रहर में अल्पनिद्रा, संस्तर से रहित एकान्त प्रासुक भूमिप्रदेश में दण्डाकार या धनुषाकार शयन करना भूमिशयन मूलगुण है। छहढाला में कहा है कि ह्न

'भूमांहि पिछली रयनि में, कछु शयन एकासन करन।।'

अनगारधर्मामृत में अध्याय ९, श्लोक ७ में लिखा है ह्न

'साधुजन थोड़े समय को शारीरिक थकान को दूर करने के लिये क्षणिक योगनिद्रा ग्रहण करते हैं। वस्तुत: निद्रा भी योग के तुल्य है, क्योंकि निद्रा में इन्द्रिय, आत्मा, मन और श्वास सूक्ष्म अवस्थारूप हो जाते हैं।' इस संबंध में भावदीपिकाकार कहते हैं ह्न

'रात्रि के पिछले प्रहर में प्रासुक पृथ्वी पर अल्पनिद्रा सहित सोते हैं। जन्तुरहित पृथ्वी को देखकर पिच्छिका से परिमार्जन करके शयन करते हैं। पिच्छिका से जीवों का ही परिमार्जन करते हैं, कंकड़ादि को नहीं हटाते।'

भूमि शयन इन्द्रिय सुखों का परिहार करने के लिये, तप की भावना के लिए और शरीर आदि से नि:स्पृहता आदि के लिए किया जाता है। इस गुण के पालन से शरीर के प्रति ममत्व का निराकरण होता है।

४. अदन्तधोवन ह्न 'संयम की रक्षा हेतु मुनिजन अंगुली, नख, दांतोन, तृण–विशेष, पत्थर, छाल आदि के द्वारा दांत के मल का शोधन नहीं करते। यह अदन्तधोवन मूलगुण है।

५. अस्नानव्रत ह्न जल का सिंचन, उबटन, तैलमर्दन, शरीरसंस्कार आदि का त्याग करना, अस्नान मूलगुण है। मुनि शरीर का किंचित् भी संस्कार नहीं करते। मुख, नेत्र और दांतों का प्रक्षालन, शोधन, सुगन्धित द्रव्य से उबटन, अङ्गमर्दन, मुष्टि, काष्ठ–यंत्र आदि से शरीर दबाना आदि मुनि नहीं करते तथा शरीर के अवयवों को धूप से सुगंधित करना अथवा रोग की आशंका व शोक आदि से बचने के लिये, मानसिक आह्लाद के लिए धूप का प्रयोग करना, नेत्रों में काजल लगाना, सुगन्धित तेल से शरीर संस्कार, चन्दनादि का शरीर पर लेपन, नासिकाकर्म (नेति करना) नसों को वेधकर रक्त निकालना आदि कार्य भी मुनि अपने शरीर–संस्कार के निमित्त कभी नहीं करते।

६. खड़े–खड़े आहार लेना ह्न 'दीवार आदि का सहारा न लेकर, जीव–जन्तु से रहित, तीन प्रकार की भूमि की शुद्धिपूर्वक, समपाद खड़े होकर, दोनों हाथ की अंजुली बनाकर भोजन करना, स्थितिभोजन मूलगुण है।'

'खड़े रहकर पाणिपात्र में आहार लेना। अपने हाथ की अंगुली को पाणिपात्र या करपात्र कहते हैं। अपने दोनों हाथों की अंगुलियाँ मिलाकर पात्र बनाते हैं, उसमें गृहस्थ भक्तिपूर्वक ग्रास रखते हैं, उस ग्रास को मुख में ग्रहण करते हैं। इसी प्रकार जल ग्रहण करते हैं, उस जल से अन्तर–बाहर मुख और हस्ताशिद शुद्ध करके आहार करते हैं ह्न ऐसे खड़े–खड़े भोजन–पान ग्रहण करना, **स्थितिभोजन मूलगुण** है।

७. एकभुक्त आहार ह्न मूलगुण में संयम, ज्ञान, ध्यान, अध्ययन एवं साधना की वृद्धि के लिए जैसा मिले, वैसा ही शुद्धरूप में आहार लेना श्रमण को अपेक्षित है। इसकी पूर्ति दिन में सूर्योदय के तीन घड़ी बीतने पर तथा सूर्यास्त से तीन घड़ी पूर्व तथा दिन के मध्यकाल में एक बार ग्रहण किये सीमित आहार से ही हो जाती है। मुनि एकाधिक बार आहार ग्रहण नहीं करते, क्योंकि एकाधिक बार भोजन संयम में बाधक है।

केशलोंच से लेकर एकभक्त तक के शेष सात मूलगुण श्रमण के बाह्य चिन्ह हैं। अन्तरंग कषायमल की विशुद्धि के लिए बाह्य क्रियाओं की शुद्धता का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। श्रमण को प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करने, शरीर को कष्टसहिष्णु बनाने तथा लोकलज्जा और लोकभय से ऊपर उठने के लिए भी ये सात मूलगुण महत्त्वपूर्ण हैं।'

छठवें गुणस्थान में अट्ठाईस मूलगुण के अतिरिक्त अन्यवृत्ति नहीं होती। ये अट्ठाईस मूलगुण तो व्यवहार से हैं। परमार्थ से तो स्वरूप में रमना ह्न यह एक ही मूलगुण है। यहाँ सामायिक पूर्वक छेदोपस्थापना की बात की गई है। इसमें शुभ का निषेध करके निर्विकल्प सामायिकदशा हो गयी है; फिर विकल्प उत्पन्न होने पर छठवें गुणस्थान में मुनिराज ये २८ मूलगुण पालते हैं। इन मूलगुणों को निर्दोष पालन ही दिगम्बर मुनिराज की बाह्य पहचान हैं। उत्तरगुण भी यथाशक्य पालते ही हैं, पर उत्तरगुण मुनि की कसौटी नहीं होती।

इसप्रकार मुनिराज के २८ मूलगुणों की निश्चय–व्यवहार नय सापेक्ष संक्षिप्त चर्चा हुई। शेष चर्चा अगले तत्त्वोपदेश में होगी।'' ॐ नमः। ●

* * *

संसारी प्राणियों के दु:खों को देख–देख करुणानिधान आचार्यश्री ने अपने प्रवचन नियमित चालू रखे।

पिछले प्रवचन में आये विषय को स्मरण दिलाने के प्रयोजन से आचार्यश्री ने एक प्रश्न पूछा ह्न ''बताओ मुनियों के मूलगुण कितने व कौन–कौन से हैं?''

उत्तर मिला ह्न''मुनियों के अट्ठाईस मूलगुण होते हैं ह्न

पंचमहाव्रत समिति पन, पंचेन्द्रिय जय पाय।
छह आवश्यक सप्त गुण, गुण अठवीस कहाय।।

पुनः दूसरे श्रोता से पूछा ह्न ''सात शेष गुणों के नाम बताओ?''

उत्तर मिला ह्न

''केशलुंच अचेलकपना, एकभुक्त व्रतधार।
अदंतधोवन अस्नानव्रत, खड़े–खड़े आहार।।
भूमि शयन पिछली रयन, सोवत हैं ऋषिराज।
सात शेष गुण इस तरह पालत हैं मुनिराज।।''

संतोषजनक उत्तर पाकर विषय को आगे बढ़ाते हुए आचार्यश्री ने कहा ह्न ''देखो! मुनि के तेरह प्रकार के चारित्र के भेदों में पाँच महाव्रत एवं पाँच समितियाँ तो मूलगुणों में चर्चित हो ही गई हैं ह्न शेष तीन गुप्तियों का संक्षिप्त स्वरूप अर्थप्रकाशिका अनुसार निम्नप्रकार है ह्न

'संसार परिभ्रमण के कारणों से आत्मा की रक्षा करना गुप्ति है तथा **सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः** अर्थात् मन–वचन–काय रूप योगों की बाह्य प्रवृत्ति को एवं योगों की स्वच्छन्द प्रवृत्ति को रोककर योगनिग्रह करना गुप्ति है।'

पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं ह्न 'वीतरागभाव होने पर मन–वचन–काय की चेष्टा का न होना ही गुप्ति है। अज्ञानी जीव बाह्य मन–वचन–काय की चेष्टा मिटाये, पाप–चिन्तवन न करे, मौन धारण करे, गमनादि न करे; इसे ही गुप्ति मानता है। सो यहाँ तो मन में भक्तिरूप प्रशस्तराग से भी नाना विकल्प होते हैं, वचन–काय की चेष्टा स्वयं ने रोक रखी है; वहाँ शुभप्रवृत्ति है, परन्तु प्रवृत्ति में गुप्तिपना बनता नहीं है।'

जीव के उपयोग का मन के साथ युक्त होना सो मनोयोग है, वचन के साथ युक्त होना सो वचनयोग है और काय के साथ युक्त होना सो काययोग है तथा उक्त तीनों प्रवृत्तियों की निवृत्ति होना क्रमशः मनगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति है। पर्याय में शुद्धोपयोग की हीनाधिकता होती है, तथापि उसमें शुद्धता की जाति तो एक ही प्रकार की है। जब जीव वीतरागभाव के द्वारा स्वरूपगुप्त रहता है, तब मन, वचन और काय की ओर का आश्रय छूट जाता है। यही निश्चयगुप्ति है।

सर्व मोह–राग–द्वेष को दूर करके अखण्ड अद्वैत परम चैतन्य में भली–भांति मन का स्थित होना **निश्चय मनोगुप्ति** है। सम्पूर्ण असत्यभाषा को इस तरह त्यागना कि मूर्तिक द्रव्य में, अमूर्तिक द्रव्य में या दोनों में वचन की प्रवृत्ति का रुकना और जीव का परम चैतन्य में स्थिर होना, **निश्चय वचनगुप्ति** है। संयमधारी मुनि जब अपने चैतन्यशरीर से जड़ शरीर का भेदज्ञान करता है, तब अंतरंग में चैतन्यशरीर में निश्चलता होना **निश्चय कायगुप्ति** है।

छठवें गुणस्थानवर्ती साधु के शुभभावरूप गुप्ति भी होती है, इसे व्यवहारगुप्ति कहते हैं; किन्तु वह आत्मा का स्वरूप नहीं है, वह शुभ विकल्प है, इसलिए ज्ञानी उसे हेय समझते हैं; क्योंकि इससे बंध होता है। इसे दूर कर साधु निर्विकल्प दशा में स्थिर होते हैं, इस स्थिरता को अस्ति से निश्चयगुप्ति कहते हैं। यह निश्चयगुप्ति संवर का सच्चा कारण है। इस प्रकार मुनियों के तेरह प्रकार का चारित्र होता है।'' **(क्रमशः)**

मेरठ संभाग के १६ स्थानों पर एक साथ ह्न

ग्रुप शिविर का भव्य आयोजन

मेरठ (उ.प्र.) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मेरठ शाखा के प्रयासों से दिनांक 8 से 15 जून, 2008 तक पश्चिमी उत्तरप्रदेश के 16 स्थानों पर एक साथ जैनत्व संस्कार शिविर का सफल आयोजन अनेक उपलब्धियों सहित हुआ।

प्रमुख उपलब्धियाँ ह्न

* सरधना में फैडरेशन की नई शाखा की स्थापना
* कांधला में फैडरेशन की शाखा का पुनर्गठन
* कांधला में वीतराग–विज्ञान पाठशाला का गठन
* बावली ग्राम में वीतराग–विज्ञान पाठशाला का शुभारंभ

अनेक उपलब्धियों सहित इस शिविर को सफल बनाने में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, मंगलायतन एवं ध्रुवधाम बांसवाडा के 25 विद्वानों का अमूल्य सहयोग मिला।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 7 जून को श्री दिगम्बर जैन मन्दिर तीरगरान में श्रीमती कंचन जैन ध.प. श्री मूलवर्धन जैन सर्राफ के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री अनिल जैन दास द्वारा झण्डारोहण किया गया। शिविर का आयोजन निम्न स्थानों पर हुआ ह्न

मेरठ में विद्वान पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी तथा शिविर संयोजक श्री पंकज जैन थे। **मवाना** में विद्वान श्री श्रेयांस जैन एवं श्री विवेक जैन तथा शिविर संयोजक श्री सोनू जैन थे। **खतौली** में विद्वान श्री अभिषेकजी जैन सिलवानी तथा शिविर संयोजक श्री कल्पेन्द्र जैन थे। **मुजफ्फरनगर** में विद्वान श्री अभिषेक जैन कोलारस तथा शिविर संयोजक श्री मधुबन जैन थे। **हरिद्वार** में विद्वान श्री रजत जैन भिण्ड एवं श्री वीरेन्द्र जैन वीर तथा शिविर संयोजक श्री बालेश जैन थे। **विकासनगर** में विद्वान श्री विक्रान्त जैन भगवां एवं श्री आशीष जैन भगवां तथा शिविर संयोजक श्री हरीशचन्द्र जैन थे। **सहारनपुर** में विद्वान पण्डित शाकुल शास्त्री मेरठ, श्री रविन्द्र जैन बकस्वाहा एवं श्री पुलकित जैन तथा शिविर संयोजक श्री प्रमोदकुमार जैन थे। **रामपुर मनिहारन** में विद्वान श्री शैलेष जैन खतौली तथा शिविर संयोजक श्री भूपेन्द्र जैन थे। **कांधला** में विद्वान श्री गौरव जैन बावली एवं श्री पंकज जैन तथा शिविर संयोजक श्री गुनपाल जैन थे। **बावली** ग्राम में विद्वान श्री आशीष जैन सिलवानी एवं श्री विवेक जैन शाहगढ तथा शिविर संयोजक श्री नरेन्द्रकुमार जैन थे। **छपरौली** में विद्वान श्री अनेकान्त जैन दलपतपुर एवं श्री समकित जैन कोटा तथा शिविर संयोजिका श्रीमती ऊषा जैन थीं। **बड़ौत** में विद्वान श्री ऋषिकेश जैन एवं श्री अनेकान्त जैन तथा शिविर संयोजक श्री आनंद जैन थे। **खेकड़ा** में मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में शिविर का आयोजन हुआ।

सभी स्थानों पर प्रतिदिन पूजन–विधान, बालकक्षा, प्रौढ कक्षा, प्रवचन, जिनेन्द्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सुन्दर आयोजन हुआ।

बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

01. **कोलकाता :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर, पद्मोपुकुर में श्रुत पंचमी के अवसर पर आयोजित आठ दिवसीय शिविर में बाल ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही बाल वर्ग के लिये विशेष रूप से संचालित कक्षाओं में पण्डित मेहुलजी शास्त्री कोलकाता एवं पण्डित सुमतजी शास्त्री टीकमगढ़ ने वीतराग–विज्ञान पाठमाला व बालबोध पाठमाला की कक्षायें ली ।

शिविर के दौरान श्रुत पंचमी पर्व के अवसर पर प्रात: श्रुतपंचमी विधान तथा रात्रि में अनेक तात्त्विक विषयों पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

02. **कानपुर (उ. प्र.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द स्मारक ट्रस्ट चौक सराफा, अ. भा. जैन युवा फैडरेशन एवं अरिहंत महिला मंडल के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 8 जून, 08 तक बाल–युवा संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री कानपुर, पण्डित दीपकजी धवल भोपाल एवं मंगलायतन से पधारे हुये चार छात्र विद्वानों द्वारा बालकों को तत्त्वबोध कराया गया।

शिविर के अंतिम दिन श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर शिविर का समापन समारोह आयोजित हुआ, जिसमें केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री प्रकाश जयसवाल उपस्थित थे। इस प्रसंग पर ट्रस्ट द्वारा श्री पवनजी जैन मंगलायतन का सामूहिक अभिनन्दन किया गया। शिविर में लगभग 450 बालक–बालिकाओं ने धर्मलाभ लिया। सम्पूर्ण शिविर पण्डित अनिलकुमारजी 'धवल' भोपाल एवं अमित जैन 'मंगलम' के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

03. **खतौली (उ. प्र.) :** यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मेरठ द्वारा आयोजित एवं युवा फैडरेशन, खतौली द्वारा संचालित जैनत्व बाल संस्कार शिविर का सफल आयोजन दिनांक 3 से 15 जून, 08 तक श्री दिगम्बर जैन मदिर पीसनोपाड़ा में किया गया। शिविर में जयपुर से पधारे पण्डित अभिषेकजी शास्त्री तथा पण्डित सोनूजी शास्त्री के प्रतिदिन सुबह, दोपहर व शाम को तीनों समय कक्षाओं व प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

अंत में परीक्षा लेकर प्रथम–द्वितीय स्थान प्राप्त शिविरार्थियों को विशेष पुरस्कार के अतिरिक्त समस्त प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

शिविर में सर्वश्री अमरचंद सुनीलकुमार जैन सर्राफ, प्रवीणकुमार जैन, आभा जैन, राजकुमार जैन, कल्पेन्द्र जैन एवं पवन जैन का विशेष सहयोग रहा।

04. **गुना :** यहाँ श्री वर्द्धमान जिनालय, वीतराग–विज्ञान भवन में अ. भा. जैन युवा एवं महिला फैडरेशन द्वारा दिनांक 6 से 19 जून, 08 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के प्रवचनों तथा श्रीमती सुधा जैन उज्जैन, कु. स्वाति शास्त्री जयपुर, पण्डित समकित शास्त्री एवं पण्डित स्वानुभव शास्त्री की कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। आपके अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित राजीवजी शास्त्री, श्री मनोज जैन, श्रीमती रेखा जैन, कु. समता जैन, कु. अनुभूति जैन एवं कु. शिल्पा जैन ने भी शिक्षण–कक्षायें ली। शिविर में 435 शिविरार्थियों ने लाभ लिया।

शिविर के मध्य 6 जून को सद्भावना रैली, 8 जून को श्रुत पंचमी पर्व पर विशाल शोभायात्रा एवं 15 जून को विशाल अहिंसा रैली निकाली गई।

सम्पूर्ण आयोजन में शिविर के निर्देशक पण्डित सुरेशचंदजी शास्त्री, परामर्शदाता पण्डित अनिलकुमार शास्त्री, मुमुक्षु मण्डल के सदस्यों, महिला फैडरेशन के सदस्यों व युवा फैडेरशन के सदस्यों का सक्रिय योगदान रहा।

श्रुतपंचमी पर्व धूमधाम से मनाया

१. **कोटा (राज.) :** यहाँ दिनांक 7 व 8 जून को श्रुत पंचमी पर्व मनाया गया। इस अवसर पर 7 जून को श्री बालचंदजी पटवारी परिवार की ओर से सरस्वती मंडल विधान कराया गया। 8 जून को भव्य जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई। समारोह के झण्डारोहणकर्त्ता श्री वीरेन्द्रकुमार जैन हरसौरा परिवार थे। इस अवसर पर आयोजित श्रुतस्कंध मंडल विधान का आयोजन पण्डित जयकुमारजी जैन परिवार की ओर से किया गया।

इस प्रसंग पर ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री एवं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा का मंगल उद्बोधन प्राप्त हुआ साथ ही पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा का समागम भी प्राप्त हुआ।

विधि–विधान के समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुनीलकुमारजी 'धवल' एवं श्री कांतिकुमारजी इन्दौर के सहयोग से सम्पन्न हुये।

कार्यक्रमों में पण्डित रतनचंदजी चौधरी का सक्रिय सहयोग रहा।

2. **दिलशाद गार्डन, दिल्ली :** यहाँ 'अध्यात्मतीर्थ' आत्मसाधना केन्द्र के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन द्वारा श्रुत पंचमी पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर भव्य जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् झण्डारोहण पूर्वक श्रुतपंचमी पूजन हुई।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर द्वारा श्रुत के अवतार की गौरव गाथा सुनने का अवसर मिला। आपके साथ ही पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर, विदुषी राजकुमारीजी सनावद आदि का भी उद्बोधन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली ने एवं मंच संचालन पण्डित संदीपजी शास्त्री बाँसवाड़ा ने किया।

३. **जयपुर :** यहाँ राजस्थान जैन साहित्य परिषद की ओर से पर्व के अवसर पर तीन दिवसीय विशेष आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत विद्वत्तविचार गोष्ठी, विधान एवं विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

ऋषभदेव संगीत पद्म अवार्ड शुरु

भीलवाड़ा (राज.) : जिनेन्द्र कला केन्द्र इन्टरनेशनल द्वाराजैन किशोर व युवा वर्ग को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप छोड़ने के लिये प्रेरित करने के उद्देश्य से ऋषभदेव संगीत पद्म अवार्ड प्रारंभ करने की घोषणा की गई है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव द्वारा प्राणियों को षट्कर्म में संगीत, नृत्य, चित्रकला आदि के प्रशिक्षण देने का उल्लेख मिलता है। इस कारण उनके नाम से ही अवार्ड देने का निर्णय लिया गया है।

श्री निहाल अजमेरा ने बताया कि 40 वर्ष से कम उम्र के गिनीज या लिम्का बुक में नाम दर्ज कराने वाले नेशनल अवार्ड या विश्वविद्यालय से एम.ए. म्यूजिक में प्रथम स्थान प्राप्त करनेवाली प्रतिभाओं, विदेशों में एवं भारत में राष्ट्रीय स्तर पर संगीत नृत्य का प्रभावी प्रदर्शन देने वाले कलाकारों को एवं संगीत नाट्य, चित्रकला में पीएच. डी. उपाधि प्राप्त करने वाले को यह अवार्ड प्रदान किया जायेगा। अवार्ड में श्रेष्ठ तीन प्रतिभाओं को 11–11 हजार रुपये, पदक व सम्मान पत्र प्रदान किये जायेंगे।

ये अभ्यर्थी 30 जुलाई, 08 तक पूर्ण विवरण के साथ संस्था में आवेदन जमा करा सकते हैं। **ह्न निहाल अजमेरा (सचिव)**
जिनेन्द्र कला केन्द्र इन्टरनेशनल सरगम भवन, आमलियों की बारी, भीलवाड़ा

बालचन्द इंस्टीट्यूट का विज्ञापन

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 2

पहला प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जैनदर्शन में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकता को मुक्ति का मार्ग बताया गया है और यह ग्रन्थ भी मोक्ष के मार्ग पर प्रकाश डालनेवाला अर्थात् मोक्षमार्गप्रकाशक है; अतः इसमें सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र का स्वरूप विस्तार आनेवाला था; जिसे उन्होंने नौवें अधिकार में आरंभ किया है; पर ग्रन्थ तो अधूरा है ही, वह अधिकार भी पूरा नहीं हो पाया।

आरंभ के आठ अधिकार तो मात्र भूमिका ही हैं।

सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र मुक्ति का मार्ग है और मिथ्यादर्शन, ज्ञान चारित्र संसार का मार्ग है। आठ अधिकारों में संसारमार्ग का निरूपण ही हो पाया है। संसार समुद्र से पार होने के लिये संसार के कारणरूप मिथ्या-दर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र को समझना भी अत्यन्त आवश्यक है। यही कारण है कि उन्होंने इनका विवेचन भी विस्तार से किया।

इससे आप कल्पना कर सकते हैं कि जब संसार मार्ग ही ३४९ पृष्ठों में है तो फिर मुक्ति का मार्ग कितने पृष्ठों का होता।

अधिकतर लोग मिथ्यात्व का अर्थ अकेला मिथ्यादर्शन ही समझते हैं; जबकि मिथ्यात्व में मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र तीनों ही शामिल हैं। इसीप्रकार सम्यक्त्व का अर्थ भी अकेला सम्यग्दर्शन नहीं; अपितु सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र ह्न ये तीनों ही होते हैं।

विशेष ध्यान रखने योग्य बात यह है कि शास्त्रों में भी कहीं-कहीं इन मिथ्यात्व और सम्यक्त्व शब्दों का प्रयोग क्रमशः अकेले मिथ्यादर्शन और सम्यग्दर्शन के अर्थ में भी होता रहा है; इसकारण प्रकरण के अनुसार इनका अर्थ समझना ही समझदारी है।

आचार्यकल्प टोडरमलजी ने मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र को अगृहीत और गृहीत के भेदों में विभाजित किया है।

जो मिथ्यादर्शन, ज्ञान, चारित्र अनादि से ही हैं, समझपूर्वक ग्रहण नहीं किये गये; वे अगृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र हैं और जो सैनी पंचेन्द्रिय होने के बाद मनुष्यगति में कुदेव-कुगुरु-कुशास्त्र के निमित्त से बुद्धिपूर्वक नये ग्रहण किये गये हैं; वे गृहीत मिथ्यादर्शन, गृहीत मिथ्याज्ञान और गृहीत मिथ्याचारित्र हैं।

मिथ्यात्व और सम्यक्त्व का गृहीत और अगृहीत के रूप में किया गया वर्गीकरण जैसा मोक्षमार्गप्रकाशक में उपलब्ध होता है, वैसा उसके पूर्व में दिखाई नहीं देता। टोडरमलजी के उत्तरकालीन विद्वानों ने इस सन्दर्भ में उनका अनुकरण किया है। पंडित दौलतरामजी कृत छहढाला की दूसरी ढ़ाल मोक्षमार्गप्रकाशक के प्रतिपादन का ही संक्षिप्त रूपान्तरण है।

पहला अधिकार पीठबंध है, जिसमें मंगलाचरणोपरान्त पंचपरमेष्ठी का स्वरूप, मंगलाचरण का हेतु, ग्रन्थ की प्रामाणिकता, स्वयं की स्थिति, वक्ता, श्रोता व पढ़ने योग्य शास्त्रों का स्वरूप आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

दूसरे अधिकार में कर्मोदय के निमित्तपूर्वक अनादिकाल से इस जीव की दशा कैसी हो रही है और तीसरे अधिकार में पंचेन्द्रिय विषयों की पराधीनता से इसने कैसे-कैसे दुःख उठाये हैं ह्न यह बताने के उपरान्त सच्चे सुख स्वरूप समझाया गया है।

चौथे अधिकार में अगृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का स्वरूप समझाया गया है और पाँचवें से सातवें अधिकार तक गृहीत मिथ्यादर्शन, गृहीत मिथ्याज्ञान और गृहीत मिथ्याचारित्र का निरूपण है।

गृहीत मिथ्यात्व के सन्दर्भ में पाँचवे अधिकार में जैनेतर मत की समीक्षा, छठवें अधिकार में व्यंतरादि देवी-दहाड़ी आदि के पूज्यत्व की समीक्षा और सातवें अधिकार में निश्चयाभासी, व्यवहाराभासी, उभया-भासी और सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टियों की समीक्षा की गई है।

इसके बाद आठवें अधिकार में उपदेश के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। सम्पूर्ण जिनागम चार भागों में विभक्त है ह्न प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग।

वस्तुस्वरूप के प्रतिपादन के लिये प्रत्येक अनुयोग की अपनी अलग शैली है। शैली को समझे बिना वस्तुस्वरूप समझना संभव नहीं है; इसलिये इस अधिकार में चारों अनुयोगों की शैलियों को विस्तार से समझाया गया है।

नौवें अधिकार में सम्यग्दर्शन का स्वरूप समझाना आरंभ ही किया था कि वे विरोधियों के षड्यंत्र के शिकार हो गये और हम सबके दुर्भाग्य से वह नौवाँ अधिकार भी अधूरा ही रह गया।

वे ग्रंथ का आरंभ निम्नलिखित मंगलाचरण से करते हैं ह्न

(मंगलाचरण)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग-विज्ञान।
नमौं ताहि जातैं भये, अरहंतादि महान।।१।।
करि मंगल करिहौं महा, ग्रंथकरन को काज।
जातैं मिलै समाज सब, पावै निजपद राज।।२।।

मैं मंगलस्वरूप और मंगल करने वाले उस वीतराग-विज्ञान को नमस्कार करता हूँ, जिसके आश्रय से अरहंतादि पंचपरमेष्ठी महान बने हैं।

मंगलाचरण करने के उपरान्त अब मैं इस मोक्षमार्गप्रकाशक नामक महाग्रंथ की रचना करने का काम आरंभ करता हूँ, इसके फलस्वरूप मुझे अनन्तगुणों का अपना समाज और निजपद का राज प्राप्त होगा।

देखो, पण्डितजी किसी भी प्रकार की लौकिक कामना न करते हुये निजगुणरूपी समाज और निजपदरूपी राज की भावना भाते हैं।

मंगलाचरणोपरान्त ग्रंथ करने संबंधी प्रतिज्ञा वाक्य में वे अपने इस ग्रंथ को महाग्रंथ कहते हैं, जिससे समझा जा सकता है उनके चित्त में साधारण ग्रन्थ नहीं, अपितु एक महान ग्रंथ लिखने का संकल्प था।

पंचाध्यायीकार ने भी अपने ग्रंथ को ग्रन्थराज कहा है और उसका नाम पंचाध्यायी रखा। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि वे पाँच अध्याय लिखना चाहते थे; पर दूसरा अध्याय भी पूरा न हो सका और वे चल दिये।

इसप्रकार हम देखते हैं कि ग्रंथराज पंचाध्यायी और महाग्रंथ मोक्षमार्गप्रकाशक ह्न दोनों ही अधूरे रह गये हैं।

लगता है कि टोडरमलजी के चित्त में पहले से ही आशंका हो गई थी कि शायद यह ग्रंथ पूरा न हो पाये। मंगलाचरण करने के कारणों की मीमांसा करते हुये उन्होंने ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति की मीमांसा बहुत विस्तार से की है। प्रश्नोत्तरों के माध्यम से बात को स्पष्ट किया है।

वे लिखते हैं ह्न **आयु का भरोसा नहीं है**। ४०–४५ वर्ष के महापुरुषों के ऐसे कथन कुछ विशिष्ट सूचना देते हैं। ऐसी बातें साठ–सत्तर वर्ष के लोग करते हैं; पर उस समय के वातारण को देखकर मानों उन्हें अकाल मृत्यु का आभास हो गया था।

जिसप्रकार उन्होंने जैन–जैनेतर मतों की समीक्षा की है, शिथिलाचार का विरोध किया है, धर्म के नाम पर चलने वाले पाखण्डों की पोल खोली है; उससे वे शिथिलाचारियों के लिये एक बहुत बड़ा खतरा बन गये थे।

चारों ओर के वातावरण को देखकर उन्हें कुछ–कुछ आभास हो गया होगा कि किसी भी दिन कुछ भी अघटित घटित हो सकता है। आखिर, उनकी यह आशंका सत्य साबित हुई और वे ४७ वर्ष की अल्पायु में विरोधियों के षड्यंत्र के शिकार हो गये।

जरा, गंभीरता से विचार करो कि उन्होंने यह अनुपम कृति हमें किस कीमत पर दी है, उन्होंने इसे जान की बाजी लगाकर लिखा है।

जैनदर्शन में सर्वश्रेष्ठ मंत्र णमोकार महामंत्र माना जाता है। इस णमोकार महामंत्र में सभी अरहंतों, सिद्धों, आचार्यों, उपाध्यायों और साधुओं को नमस्कार किया गया है।

अतः उन्होंने ग्रंथ के आरंभ में ही उक्त मंत्र का स्मरण करते हुये पंचपरमेष्ठियों के स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

एक बात विशेष ध्यान देने योग्य यह है कि उन्होंने णमोकार महामंत्र के माध्यम से पंचपरमेष्ठियों को नमस्कार करने के पहिले वीतराग–विज्ञान को नमस्कार करना उचित समझा; क्योंकि वीतराग–विज्ञान के आश्रय से ही हम–तुम जैसे साधारण जीव भी पंचपरमेष्ठी पद प्राप्त कर लेते हैं। यह बात मैं नहीं कह रहा हूँ, अपितु उन्होंने स्वयं ही लिखा है कि ह्न

नमो ताहि जाते भये अरहंतादि महान।

पंचपरमेष्ठियों का स्वरूप स्पष्ट करते हुये उन्होंने परम्परागत पद्धति को नहीं अपनाया; अपितु जहाँ हम सब खड़े हैं, वहाँ से आरंभ कर अरहंत दशा तक ले गये हैं। अरहंत का स्वरूप समझाते हुये वे लिखते हैंह्न

''जो गृहस्थपना त्यागकर, मुनिधर्म अंगीकार कर, निजस्वभाव–साधन द्वारा, चार घातिकर्मों का क्षय करके चतुष्टयरूप विराजमान हुये... ; वे अरहंत देव हैं।''

उक्त विवेचन में **गृहस्थपना** और **मुनिपना** शब्दों को भाववाची बनाया गया है। तात्पर्य यह है कि मात्र घर छोड़कर नग्न दिगम्बरदशा धारण करने से कुछ होनेवाला नहीं है; गृहस्थपना त्यागना होगा और मुनिपना धारण करना होगा। बाह्य क्रियाकाण्ड से काम नहीं चलेगा, अंतरंग भावों की पहिचान आवश्यक है। साधन की चर्चा करते हुये भी **निजस्वभाव साधन द्वारा** लिखकर यह स्पष्ट किया गया है कि बाह्य शारीरिक क्रियाकाण्ड एवं शुभभावों से घातियाकर्मों का अभाव और अनन्तचतुष्टय की प्राप्ति नहीं होती, अपितु निजस्वभावसाधन अर्थात् शुद्धोपयोग से होती है।

यद्यपि अनंतदर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्तसुख और अनन्तवीर्य ह्न इन अनन्त चतुष्टयों की प्राप्ति के लिये नग्नदिगम्बर दशा अनिवार्य है; तथापि मात्र नग्नदिगम्बर हो जाने से कुछ नहीं होगा; साथ ही शुद्धोपयोग की साधना अनिवार्य है।

जिस विधि से उन्होंने अरहन्त भगवान के स्वरूप पर प्रकाश डाला है; उसी विधि से सिद्धों के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला है।

साधु तो साधु हैं ही, आचार्य और उपाध्याय भी तो साधु ही हैं। अतः उन्होंने पहले साधुओं का सामान्य स्वरूप बताया; उसके बाद आचार्य और उपाध्यायों की चर्चा करते समय उनकी विशिष्ट विशेषताओं को अलग से बता दिया। आचार्य और उपाध्यायों में साधु संबंधी सभी गुण तो होना ही चाहिये। इसके अतिरिक्त संघ का अनुशासन–प्रशासन करने वाले आचार्य और पठन–पाठन कराने वाले उपाध्याय होते हैं।

पंच परमेष्ठियों का स्वरूप स्पष्ट करने के उपरान्त ग्रन्थ की प्रामाणिकता पर सयुक्ति प्रकाश डाला गया है।

वीतरागी सर्वज्ञ भगवान महावीर की वाणी; जो परम्परागत रूप से आज भी उपलब्ध है; यह मोक्षमार्गप्रकाशक शास्त्र उसी के अनुसार लिखा गया है; अतः इसकी प्रामाणिकता में संदेह के लिए कोई स्थान नहीं है।

इस पर यदि कोई कहे कि भगवान महावीर तो वीतरागी सर्वज्ञ थे; उनके बाद आजतक चली आई परम्परा में आनेवाले लेखक और प्रवक्ता ह्न सभी तो वीतरागी–सर्वज्ञ नहीं थे। इतनी लम्बी परम्परा में किसी ने बीच में कुछ मिलावट कर दी हो, कुछ घालमेल कर दिया हो तो....।

उक्त आशंका का निवारण करते हुये पंडितजी कहते हैं कि ज्ञानीजन उसको चलने नहीं देते। पंडितजी के उक्त कथन में ज्ञानी धर्मात्मा विद्वानों में कितना बड़ा विश्वास व्यक्त किया गया है। न केवल विश्वास व्यक्त किया, अपितु उनके कन्धों पर जिनवाणी को शुद्ध एवं पूर्ण प्रामाणिक रखने का भार भी डाल दिया है। तात्पर्य यह है कि यदि जैनदर्शन के नाम पर जैनसिद्धान्तों के विरुद्ध कोई बात चल रही हो तो ज्ञानी विद्वानों को दृढ़तापूर्वक उसका निषेध कर देना चाहिये। **(क्रमशः)**

2 जुलाई 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

साक्षात्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

नई दिल्ली : यहाँ 'अध्यात्मतीर्थ' आत्मसाधना केन्द्र पर बालिकाओं में नैतिक एवं धार्मिक संस्कारों की अभिवृद्धि हेतु मुमुक्षु समाज के प्रथम ज्ञानाराधना केन्द्र **आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन** का शुभारंभ हो रहा है।

इसके प्रथम चरण में दिनांक 1 से 4 जून, 08 तक साक्षात्कार शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में बा. ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना का मार्गदर्शन मिला। विद्यानिकेतन के प्रथम सत्र हेतु सम्पूर्ण देश से 48 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई, जिनमें से 15 छात्राओं का चयन किया गया।

आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन का भव्य उद्घाटन समारोह रविवार, दिनांक 6 जुलाई, 08 को सम्पूर्ण देश से आमंत्रित मुमुक्षु समाज के प्रतिष्ठित विद्वानों एवं श्रेष्ठीवर्ग के मध्य अनेक विशेषताओं सहित सम्पन्न होगा।

धम्म देशना शिक्षण-शिविर सम्पन्न

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ श्रुतपंचमी महापर्व की पावन बेला पर दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल महिला मंडल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर लगाया गया 9 दिवसीय धम्मदेशना शिक्षण-शिविर विविध उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर में 7 प्रान्तों के लगभग 300 लोगों ने भाग लिया। जिनकी सम्पूर्ण आवास एवं भोजन की व्यवस्था मण्डल एवं फैडरेशन की ओर से नि:शुल्क की गई। इस प्रसंग पर खनियांधाना से पधारी ब्र. अलकाबहन के साथ अन्य बहनों के मार्मिक प्रवचनों को सुनने का लाभ मिला।

शिविर में प्रतिदिन अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। आयोजन में महिला मण्डल, मुमुक्षु मण्डल एवं फैडरेशन के समस्त सदस्यों का विशेष सहयोग रहा। **ह्न दीपकराज जैन**

आमंत्रण-पत्र/स्वीकृति शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व में प्रवचनार्थ विद्वान बुलाने हेतु जिन मंदिरों/मण्डलों ने अपने आमंत्रण अभी तक नहीं भेजे हैं तो शीघ्र भेजें।

जिन विद्वानों ने अपनी स्वीकृति अभी तक नहीं भेजी है, वे शीघ्र भिजवायें, ताकि दशलक्षण पर्व पर विद्वानों को भेजने की व्यवस्था समय रहते सुव्यवस्थित रूप से की जा सके।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट – एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

वैराग्य समाचार

01. मण्डला (म. प्र.)निवासी श्री राकेशकुमारजी सिंघई के पिताजी **सिंघई धन्नालालजी जैन** का दिनांक 11 जून, 08 को 87 वर्ष की अवस्था में शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप प्रसिद्ध समाज-सेवी थे और धर्मकार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते थे। मण्डला के मंदिर निर्माण कार्य में भी आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

02. सहारनपुर निवासी पण्डित देवचंदजी जैन का 90 वर्ष की आयु में दिनांक 18 जून को देहावसान हो गया है। आप अच्छे स्वाध्यायी एवं प्रवचनकार थे। स्मारक ट्रस्ट की ओर से प्रतिवर्ष 10 लक्षण महापर्व पर भी प्रवचनार्थ जाया करते थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही निर्वाण प्राप्त करें ह्न यही भावना है।

परीक्षा तिथि निश्चित, प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड जयपुर की ग्रीष्मकालीन परीक्षायें 16, 17 व 18 अगस्त 2008 को होने वाली है। संबंधित सभी परीक्षा केन्द्रों को छात्र प्रवेश फार्म प्रेषित किये जा चुके हैं। कृपया शीघ्र भरकर भिजवायें। जिन परीक्षा केन्द्रों को अभी तक भी नहीं पहुँचे हों, वे कृपया पोस्ट कार्ड या टेलीफोन से सूचितकर प्रवेश फार्म मंगवा लेवें।

ह्न ओ.पी.आचार्य, प्रबंधक ह्न परीक्षा विभाग, फोनह्न2705581, 2707458

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ

आवश्यक सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के नये सत्र के लिये प्रवेश प्रक्रिया चालू है। इच्छुक छात्र स्वयं का पता लिखकर 5/-रुपये का टिकिट लगा हुआ लिफाफा निम्न पते पर भेजकर प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं।

प्रवेश फार्म भरकर जयपुर भेजने की अंतिम तिथि 31 जुलाई है।

पता – श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-15

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127